12 वृक्ष की गवाही

'चाणक्य' का नाम भला किसने नहीं सुना होगा। सम्राट चंद्रगुप्त के महामंत्री थे चाणक्य! उनकी सूझ-बूझ के अनेक किस्से और कहानियाँ प्रसिद्ध हैं।

कहा जाता है कि एक बार सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में एक वृद्ध किसान रोता-रोता आया और बोला, "महाराज! मैं तो लुट गया, बरबाद हो गया। मेरे मित्र शीलभद्र ने मेरा सारा जमा धन हड़प लिया।"

चंद्रगुप्त बोले, "साफ़-साफ़ कहो, क्या बात है?"

वह कहने लगा, "महाराज! मैं एक गरीब किसान हूँ। मेरा नाम पंचानन है। कुछ समय पूर्व मैं तीर्थयात्रा पर निकला था। जाते समय मैं अपना सारा जमा धन अपने मित्र के पास रखकर गया था। मैंने कहा था कि तीर्थयात्रा से लौटने पर ले लूँगा परंतु अब वापस आने पर मेरा वह मित्र मुझे पहचानता भी नहीं। कहता है, कौन-सा धन? कैसा धन? मैंने तो तुम्हें पहले कभी देखा ही नहीं। महाराज! मैं क्या करूँ? मेरे साथ न्याय कीजिए।"

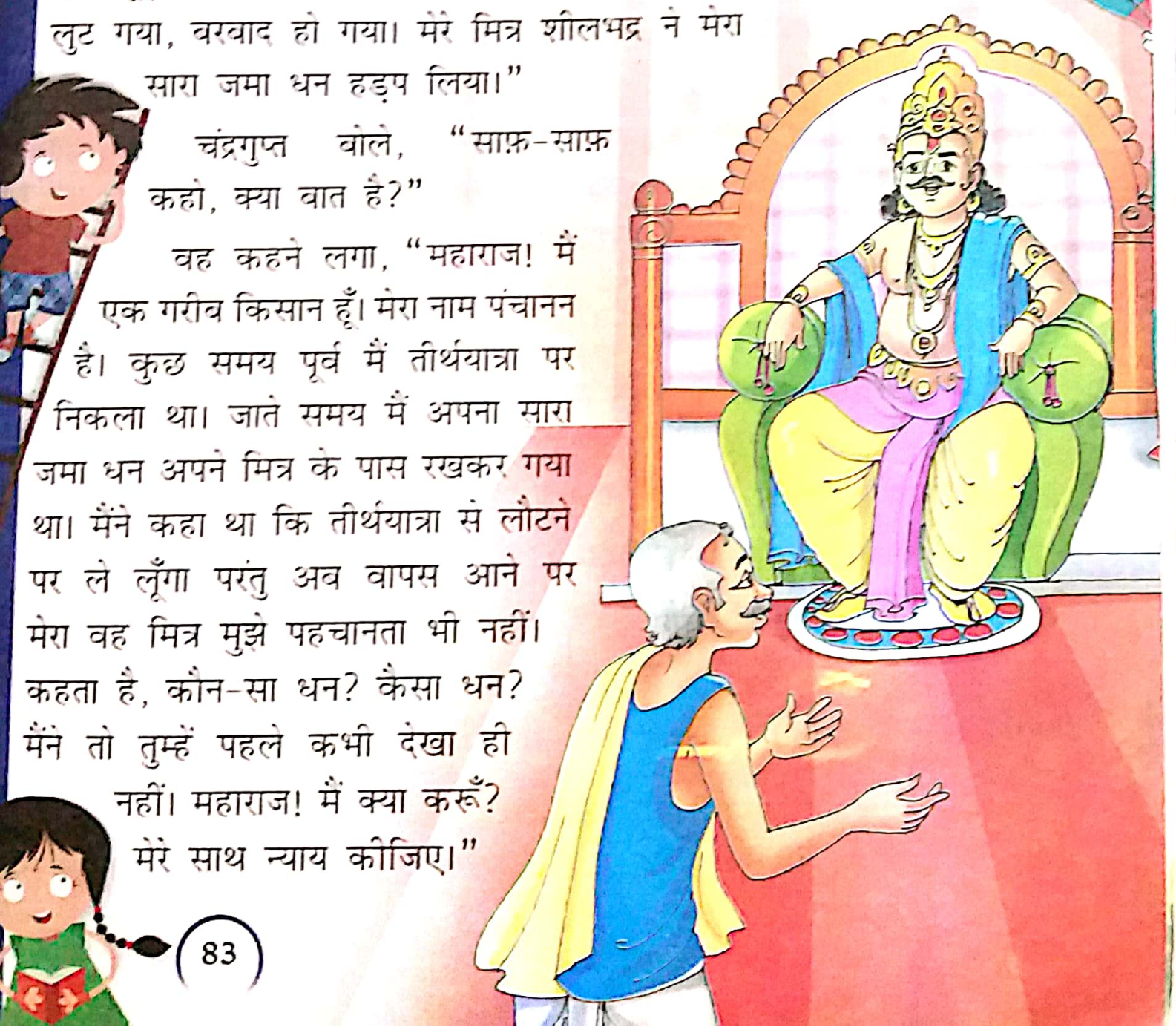

Scanned by CamScanner

महाराज ने पूछा, "तुम्हारा धन कितना था?"

किसान बोला, "महाराज! पाँच हज़ार सिक्के।"

महाराज ने पूछा, "क्या तुमने अपने मित्र के साथ कोई लिखा-पढ़ी की थी? क्या तुम्हारा कोई गवाह है?"

किसान ने सिर झुकाकर कहा, "महाराज! मैं अपने मित्र पर बहुत अधिक विश्वास करता था, इसलिए कोई लिखा-पढ़ी नहीं की। मंदिर के बाहर उस स्थान पर दोपहर में कोई आता-जाता भी नहीं अतः मुझे धन देते हुए और शीलभद्र को धन लेते हुए किसी ने भी नहीं देखा।"

महाराज ने आज्ञा दी कि शीलभद्र को बुलाया जाए। शीलभद्र आया। किसान ने फिर अपनी बात दोहराई। महाराज ने शीलभद्र से पूछा, "क्या यह किसान ठीक कह रहा है?"

शीलभद्र बोला, "महाराज! यह बूढ़ा आदमी झूठ बोल रहा है। मैं तो इसे जानता तक नहीं। किसी अनजान व्यक्ति का धन भला मैं अपने पास क्यों रखता, वह भी बिना किसी लिखा-पढ़ी के? इन महाशय को तो मैंने आज पहली बार देखा है। ये जिस मंदिर का ज़िक्र कर रहे हैं, मैं तो उस मंदिर को जानता भी नहीं। फिर वहाँ जाने की बात तो बहुत दूर की है।"

महाराज ने अपने महामंत्री चाणक्य की ओर देखा। महामंत्री ने उन दोनों को अगले दिन सुबह दरबार में उपस्थित होने का आदेश दिया। चाणक्य ने महाराज से कहा, "आप इस मुकदमे का फ़ैसला मुझ पर छोड़ दीजिए, मैं स्वयं न्याय करूँगा।"

सुबह होते ही दोनों सभा में उपस्थित हुए। दोनों ने अपनी-अपनी बात दोहराई। महामंत्री ने किसान से पूछा, "तुमने मंदिर के बाहर किस स्थान पर धन दिया था?"

वह बोला, "महोदय! मंदिर के बाहर एक पीपल का पेड़ है। उसके चबूतरे पर शीलभद्र बैठा था। वहीं मैंने उसे धन दिया था।"

शब्दार्थ– गवाह– जिसने घटना को होते हुए देखा हो, **महाशय**– सम्मानसूचक शब्द, भला आदमी, **उपस्थित**– हाज़िर

Scanned by CamScanner

महामंत्री ने पूछा, "धन देते हुए तुम्हें किसी ने देखा हो या न देखा हो, पेड़ ने तो अवश्य ही देखा होगा?"

बूढ़ा आदमी सकुचाते हुए बोला, "जी महामंत्री!" मंत्री बोले, "जाओ, पेड़ को बुलाकर लाओ। वह गवाही देगा।" हिचकिचाते हुए किसान पेड़ को लेने चला गया।

सुबह से दोपहर होने को आई परंतु किसान लौटकर नहीं आया। शीलभद्र बैठे-बैठे परेशान हो गया। महाराज ने पूछा, "क्या मंदिर बहुत दूर है, जो बूढ़ा आदमी अभी तक नहीं आया?"

भूख, प्यास तथा गरमी से परेशान, झल्लाया हुआ शीलभद्र बोला, "महाराज! मंदिर तो कोई ज़्यादा दूर नहीं है। मैं इतनी देर में मंदिर तक बीस चक्कर लगा सकता था, लेकिन वह बूढ़ा आदमी गया हो तब न! वह तो बहुत झूठा और पाखंडी है। ज़रूर घर जाकर खा-पीकर आराम कर रहा होगा।"

महामंत्री ने मुसकराते हुए शीलभद्र से पूछा, "क्यों मित्र, अभी तो तुमने कहा था कि तुम तो वहाँ कभी गए ही नहीं। तुम अब कैसे कह रहे हो कि मंदिर पास ही है? निश्चय ही वह बूढ़ा किसान सच कह रहा है और तुम झूठ! तुमने अवश्य ही उसका धन हड़प लिया है। अब अपनी इच्छा से उसका धन वापस कर दो, नहीं तो राजदंड के भागी बनोगे।"

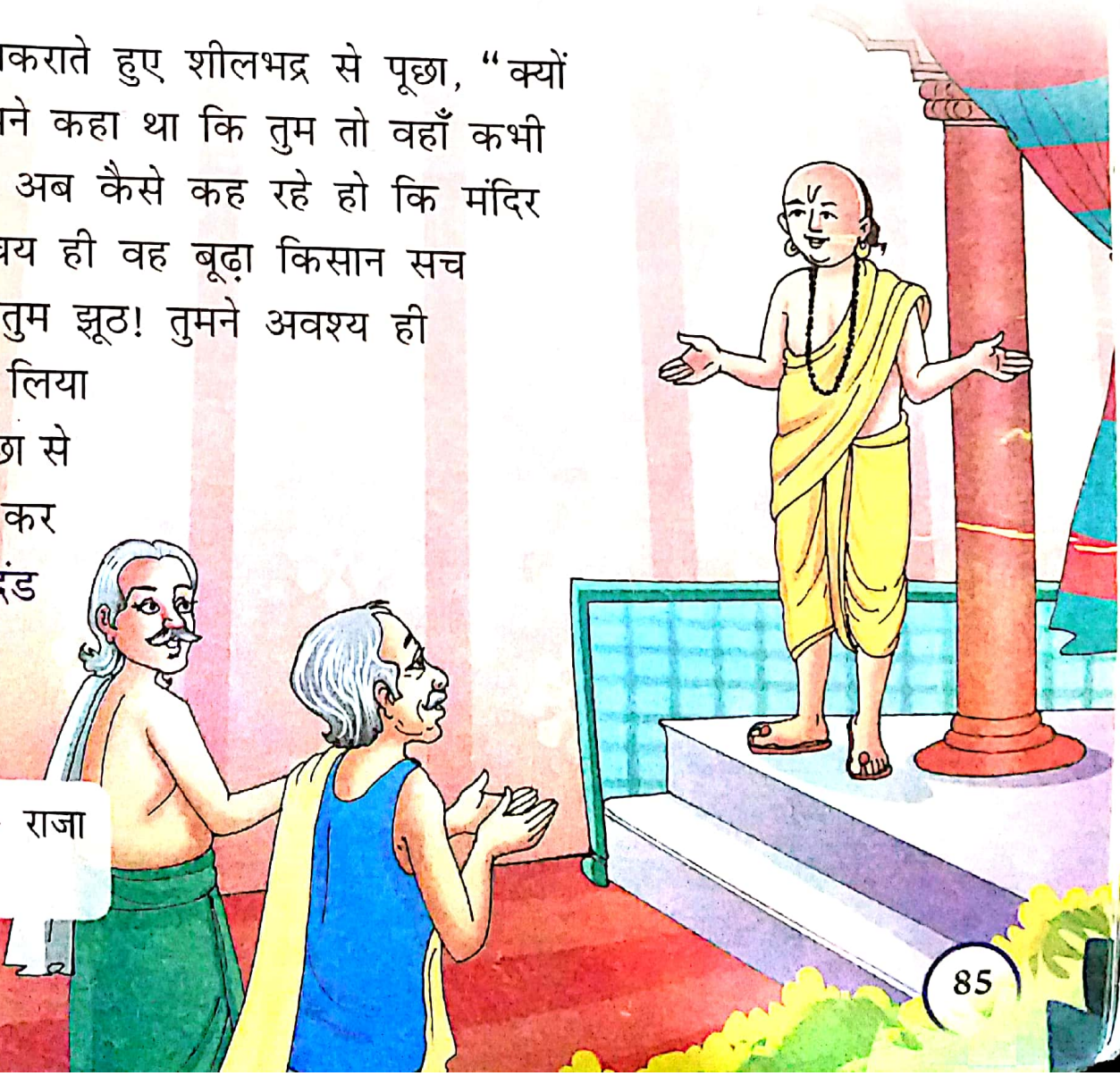

शब्दार्थ–राजदंड– राजा द्वारा दी गई सज़ा

Scanned by CamScanner

शीलभद्र स्वयं अपनी बात के जाल में फँस चुका था। उसने अपना अपराध स्वीकार कर लिया। उसने बूढ़े का धन वापस दे देने का प्रण भी किया। थोड़ी ही देर में वह किसान आया। वह बहुत ही थका-थका-सा लग रहा था।

वह बोला, "महोदय! मैंने पेड़ से बहुत अनुनय-विनय की परंतु वह गवाही देने नहीं आया।"

महामंत्री चाणक्य ने कहा, "नहीं, वह आया था। वह गवाही देकर चला गया। तुम्हारा मित्र शीलभद्र मान गया है कि उसने तुम्हारा धन लिया था। अब वह वापस देने को भी तैयार है।"

इस प्रकार चाणक्य ने अपने बुद्धि-कौशल द्वारा बिना प्रमाण एवं साक्षी के दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया।

शब्दार्थ– अपराध– दोष, **अनुनय-विनय**– प्रार्थना करना/गिड़गिड़ाना, **प्रमाण**– सबूत, **साक्षी**– गवाही देने वाला

Scanned by CamScanner